शब्द संग्रह

अधिवक्ता– वह जो हमारे बगल में उपस्थित होकर हमारे पक्ष में बोलता है तथा आवश्यक्ता के समय हमारी सहायता करता है।

भरोसा– किसी बात के लिये आश्वासित होना अथवा पूरी रीति से आशा करना।

प्रायश्चित– दण्ड चुकाना या प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा कर देना जब वह अपना लोहु बहाया तथा क्रूस पर मरा।

बपतिस्मा– अर्थात पूर्ण रीति से पानी के अन्दर जाना या मर जाना।

मसीही– पवित्र लोग विश्वासी या शिष्य।

कलीसिया– मसीह की देह या केवल देह और मसीही लोगों केझुण्ड जो सहभागिता रखने के लिये जमा होते है इसका अर्थ गिरजा घर या मकान नहीं है।

दोष सिद्धि– जब हम अनुभव करते हैं कि हम दोषी है या महसुस करते है कि हम पापी है तथा पमेश्वर से अलग किए गए हैं और दण्ड के भागी हैं।

शिष्य– चेला या अनुयायी, गुरू की शिक्षा पर चलने वाला तथा उन्हें मानने वाला।

विश्वास– परमेश्वर पर विश्वास करना तथा उसके वचन पर विश्वास; न कि जो कुछ हम देखते हैं।

संगति– सहभागिता रखना, आपस में बांटना।

सुसमाचार– अर्थात शुभ सन्देश, खुश–खबरी।

अनुग्रह– मसीह के मुल्य पर परमेश्वर का धन। इसको पाने के योग्य तो नहीं है परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य के लिये यीशु मसीह में उपाय किया है।

दोष मुक्त– परमेश्वर यीशु मसीह में हम को देखता है वैसा ही जैसे कि हम निर्दोष है तथा हमने कोई पाप नहीं किया।

प्रार्थना– साधारणतः परमेश्वर से बात करना तथा परमेश्वर की बातों को सुनना।

छुटकारा– अर्थात मुल्य देकर छुड़ाया जाना या गुलाम को मुल्य देकर स्वतन्त्रता के लिये छुड़ाना।

पश्चाताप– अर्थात् 180 घुम जाना या एक नया विचार धारण करना।

धार्मिकता– सच्चा और पवित्र होने का गुण या चरित्र।

उद्धार– मुक्ति या बचाव। यह शब्द विशेषकर आत्मिक तथा अनन्त छुटकारा के रूप में प्रयोग किया जाता है। जो परमेश्वर की ओर से उन लोगों के लिये है जो उसकी शर्तों को मान लेते हैं अर्थात पश्चाताप करके यीशु मसीह पर विश्वास करना।

उद्धारपाया हुआ– अर्थात परमेश्वर के राज्य के लिये नया जन्म पाना या सच्चे मसीही होना।

मुक्तिदाता– छुड़ाने वाला या बचाने वाला।

पापी स्वभाव– वह हमारा स्वभाव है जो पाप करने को प्रेरित करता है जिस को हम नियन्त्रण में नहीं ला सकते हैं जब तक हम मसीही नहीं बन जातें हैं।

परमेश्वर का वचन– पवित्र शास्त्र अर्थात् बाइबल या साधारणतः वचन जो परमेश्वर के द्वारा बोला गया है।

आखिरी बात !

यदि आप के पास कोई प्रश्न है जो इस पुस्तक में से है, साधारणतः आप ने क्या किया जब आप ने यीशु को अपना प्रभु तथा उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया और आप यीशु के शिष्य बन गये या आप को आराधना जाने के लिये अच्छा प्रार्थना घर मिलने में कठिनाई अनुभव होती है तो कृपया इस पते पर पत्र व्यवहार करें :

New India Evangelistic Association
P.O. Box 1, Purnia P.O & Dist.
Bihar 854 301 India
Tel: 06454- 230439
Email:newbihar@sancharnet.in

यीशु हमें अपने शिष्य होने के लिये बुलाता है, इसका अर्थ है कि हम अपने निर्णय को गम्भीरता से लेते है अपने शेष जीवन में उसके पीछे हो लेने के लिये। एक सच्चा मसीही बनना आत्मसमर्पण की प्रार्थना करने से अथवा चर्च जाने से बढकर है यह एक ऐसा जीवन जीना है जो परमेश्वर को भाता है।

पहला कदम दस मौलिक आवश्यकताओं को रूप-रेखा देता है जो नये विश्वासी के विकास और परिपक्वता (प्रौढता) के लिये हैं जब वे परमेश्वर के साथ चलना आरम्भ करते हैं।

यह पुस्तिका आप को अपने विश्वास के विषय में गवाही देने में सामर्थी बनाएगी और वे जो मसीही जीवन के विषय में अधिक जानना चाहते हैं उनके लिये बडा उपयोगी सिद्ध होगी।

स्व बॉब गॉर्डन प्रोक्लेमरस इन्टरनेस्नल, के निर्देशक थे जो सुसमाचार प्रचार शिष्यता तथा नेतृपाजी की सेवकाई थी।

डेविड फारडौली एक शोध कर्त्ता के रूप में डा. गॉर्डन के साथ निकटता में रह कर कार्य करता था।

New India Publications
Price: Rs. 30/-